Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता में सामाजिक सरोकार

मुकेश कुमार
अनुसंधित्सु : विद्यावाचस्पति, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल,
शिमला–171005 (हि. प्र.)
ईमेल: kumarm79587@gmail.com

शोध सारांश

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' का जन्म हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा जिला के बैजनाथ के निकट जण्डपुर गाँव में सन् 1975 ई. को हुआ है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' के अभी तक तीन कविता-संग्रह प्रकाशित है, जिनके नाम है– 'गूलर का फूल' (2008), 'ज़मीन पर होने की ख़ुशी' (2020) और 'प्रेम में होना' (2024)। कविता आत्मालाप नहीं, बल्कि सामाजिक-संलाप है। कविता के लिए अनुभूति आवश्यक होती है, इसलिए कविता संवेग तत्त्व से निर्मित होती है, न की सैद्धांतिक परिमाप पर आधारित होती है। कविता का लक्ष्य ही सामाजिक सरोकार से निर्मित होता है और सरोकार की सामाजिकता से अंतर्निहित होता है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता की संवेदना का मूलाधार समय-संवाद और सामाजिक-सरोकार है। सरोकार की सामाजिकता मूलतः ग्रामीण एवं लोक पक्षवादी संवेग से संपृक्त है, जहाँ प्रेम, प्रकृति, पर्यावरण और पारिस्थितिकी का क्षरित मूल्य विद्यमान है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' हिमाचल का सबसे अधिक अवप्राक्कलन कवि हैं, इसलिए इनकी कविता की संवेदना का संप्रेषण बोध शोधित-समवेक्षित नहीं है।

बीज शब्द : सामाजिक सरोकार, लोकोन्मुखता, मानवीय भावानुभूति, पर्यावरणीय चिंतन, स्थानिकता, सांस्कृतिक-साम्राज्यवाद, बिंब।

प्रस्तावना

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' कविता में कथात्मक दृश्य का कवि हैं। कविता का यह दृश्य बिंबात्मक है, जो लोक के जीवन और जीवन की लोकबद्धता से पोषित है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' का मानना है कि– कविता जीवन ही है। जीवन का अभिप्राय सुखानुभूति एवं दुखानुभूति मनोवेग से है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' के कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं– संवेगात्मक लोकोन्मुखता, पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी बोध, विकृत सामाजिक सरोकार, काल-प्रतिबद्धता, ऐंद्रिक सूक्ष्मदर्शिता और प्रेमानुभूति एवं मानवीय भावानुभूति। संवेगात्मक लोकोन्मुखता में मूलतः सांस्कृतिक-साम्राज्यवाद, किसानी जीवन, स्थानिकता और रीति-रिवाज एवं परंपरागत थोथी अवधारणा जैसी प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता का सरोकार समाजबद्ध है, जो छीजते मूल्य और छंटती संवेगानुभुति की पक्षधरता से संपृक्त-संयोजित है।

लोक-संवेगानुभुति की पृष्ठभूमि में तर्क-विश्लेषणात्मक प्रविधि नहीं, बल्कि परंपरागत विधि-मान्यता का अधिक योग रहता है। कवि की 'छाती पर पत्थर' कविता हिमाचली रीति-रिवाज एवं परंपरागत थोथी अवधारणा की कविता है, जहाँ मृत्युपरांत आत्मा को प्रसन्न करने के लिए कई तरह के कर्मकांड किए जाते हैं। चंद्रकांत सिंह ने राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' के कविता की ग्रामीण-यथार्थ की संवेग-संसक्ति के संदर्भ में कहा है कि– "उनकी कविताएँ लोक-मन का गहरा देशांतर हैं जिनमें पैर रखकर ही इनकी कचोट का अनुभव किया जा सकता है।"[1] यह पितृपक्ष पूजन की थोथी परंपरा की कविता है। पंक्तियाँ हैं–

"करेगा माँ का चवर्ख

सारे विधि-विधानों

ब्राह्मणों को दान-भोज और

गाँव भर को भोजन कराकर"[2]

'बलि के बकरे का संघर्ष' कविता धर्म एवं कर्म की आड़ में पशुबलि का सहृदय दस्तावेज है। तरह-तरह के मानक विधान एवं रीति-रिवाज, परंपरागत मान्यता और देवतंत्रीय भय मनुष्य के मानवीय पक्ष को खोखला कर रहे हैं। यह कविता सामाजिक सरोकार और सामाजिक जागरूकता का संदेश देती है और साथ ही संवैधानिकता का पाठ भी कराती है। संवैधानिक रूप से पशुबलि अवैध है, लेकिन ग्रामीण-पहाड़ी क्षेत्र की देवीय परंपरा, धर्मांधता, अंधविश्वास और कर्मकांड की ब्राह्मणवादी सोच के कारण पशुबलि दी जाती है। इस कविता में जीव के जीवन के हनन, अनैतिकता, पशु-क्रूरता और असंवेदनशीलता का पक्ष है। यह कविता परंपरा-उत्पादित है। यह पशुबलि धर्म या देवी-देवता के नाम एवं काम पर दी जाती है, जिसे कवि ने यथार्थ तरीके से व्यंजित किया है–

"तुम्हें जब बलि-विधान का

करना होता है मांसाहारी आयोजन

तो बकरे की याद आती है

इंसान कब महत्त्वपूर्ण हो गया बकरे से

और बकरा क्यों महत्त्वपूर्ण है

आज भी इंसान के लिए"[3]

'उसकी ज़रूरत' कविता मूलतः काल के तत्त्व की प्रतिबद्धता का त्रिकोणीय सूत्र बनाती है, जिसके पक्ष है– किसानी जीवन-संघर्ष की संवेदना, पहाड़ी एवं ग्रामीण खान-पान की स्थानीय-पारिवेशिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक-साम्राज्यवाद। कविता का मूलाधार लोकोन्मुखता की संवेगात्मक परिधि से संपृक्त है। यह कविता ग्राम्य जीवन की ठेठ एवं सादगीपूर्ण चरित्र का चित्रण करती है, जहाँ देहाती जीवन शैली में जीवन एवं जनमानस की कसक और कशमकश जिंदादिली के साथ व्यंजित होती है। यह कविता चरित्रपरक है, जिसका विवरण कामकाजी घरेलू परिवेश के देहाती संदर्भ से होता है। कविता में घ्राण बिंब का स्थापन संप्रेषणीयता का मूल संवेग है। चंद्रकांत सिंह ने कहा है– "उसकी ज़रूरत कविता मैदानी और पहाड़ी अनुभवों के मिलेजुले प्रयोग की कविता है।"[4] वस्तुतः इस कविता में लोक-संवेगानुभुति ही है, न की मैदानी जीवन का कोई पक्ष है। कविता का आरंभ धान रोपाई से होता है, जिसके केंद्र में स्कूल जाने वाली 'लड़की' मुख्य पात्र के रूप में मौजूद है। पहाड़ी एवं ग्रामीण खान-पान की सादी एवं स्थानीय-पारिवेशिक पृष्ठभूमि में किसानी परिवार का परिदृश्य है–

"एक कटोरे में हैं धनिये और लहसुन के हरे पत्ते

कुछ पुदीना और मुट्ठी भर हरी मिर्च

धो कर धर देती है वह उन्हें सिल पर"[5]

कविता के संवेग और संप्रेषण से ग्रामीण समाज के यथार्थ का परिदृश्य जीवंत होता है, जहाँ किसानी परिवार की यथादशा सीधे-सादे तरीके से अन्वेषित है। गाँव-देहात का यह किसानी परिवार किसी तरह के स्वादिष्ट व्यंजन की

दरकार नहीं करता है, बल्कि भात के साथ चटनी खाकर ही वह खुश होता है और अपना किसानी कामकाज करता है। चटनी बनाने की प्रक्रिया में वह 'लड़की' अब–

"सिल पर धरे पत्तों को पीसती है बट्टे से

रख देती है पातड़ी में

फिर पीसती है सुखाकर रखे बुरांस के फूलों को"[6]

यह केवल चटनी बनाने की विधि का संकेतक नहीं है, बल्कि किसान जीवन की संघर्ष एवं संवेदना की अभिव्यंजना भी है। यह संवेग के ग्रामांचल की कविता है। यह परिवेश एवं स्थानिकता के संवीक्षण की कविता है। यह चित्रपरकता और चरित्रपरकता की कविता है। यह ठेठ और ठोस जीवन-प्रसंग की कविता है। यह लोकपक्षवादी कविता है, जिसकी काल-प्रतिबद्धता में किसान परिवार की जीवन-सारिणी विद्यमान है। चंद्रकांत सिंह ने इसी कविता के पक्ष में कहा है कि– "कवि ने बड़े सलीके से पहाड़ी लड़की के दुहरे जीवन-संघर्ष को दिखाया है। जहाँ वह धान की रोपाई भी करती है और पूरे परिवार के लिए चटनी और भात भी बनाती है।"[7] यह गलत व्याख्या है; क्योंकि लड़की का 'धान की रोपाई' और 'चटनियाँ' एवं 'भात' बनाना ही 'जीवन-संघर्ष' का प्रतिबिंब या पर्याय नहीं है, बल्कि यह 'धान की रोपाई' या 'भात' केवलमात्र दृश्य या निमित है और इस कविता की मूल पृष्ठभूमि ग्रामीण जनमानस अथवा लोक जीवन की स्थानिकता में निहित है। वस्तुत: धनिया, लहसुन, पुदीना और हरी मिर्च पीसकर वह लड़की चटनी में फिर–

"मिलाती है खटाई और नमक

इस तरह तैयार हो जाती हैं

दो पातड़ियों में दो चटनियाँ

एक हरी, दूसरी लाल"[8]

वर्तमान सॉफ्टड्रिंक और फास्टफूड के विकृत एवं आयातित सांस्कृतिक-साम्राज्यवाद का दौर है, जहाँ परंपरागत खाद्यान और संस्कृति का क्षय-क्षरण हो रहा है और पश्चिमी या यूरोपियन संस्कृति का प्रचलन बढ़ रहा है। संस्कृति एवं स्थानिकता के विघटन के दौर में ग्रामीण एवं पहाड़ी खान-पान का संरक्षण क्षयित होता जा रहा है। कविता से स्पष्ट होता है कि यह 'चटनियाँ' किसी सब्जी या दाल के साथ नहीं, बल्कि माँड निकालकर तैयार हुए भात के साथ खाने के लिए हैं, जो दाल और सब्जी का ही प्रतिरूप है। यह कविता किसान-परिवार के श्रमशीलता अथवा श्रमिक संवेदना की कविता है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' ऐंद्रिक कवि हैं। उनकी कविता का काम शब्द या शब्द के अर्थ से ही नहीं चलता है, बल्कि बिंब से अधिक अर्थोद्घाटन होता है। यह कविता किसान परिवार की जिजीविषा और जीवटता का प्रतिबिंबन है–

"इकट्ठा है सारा परिवार

खा रहा है थाली भर-भर

दो तरफ सजी दो चटनियों से

हाड़-तोड़ मेहनत के बाद जब लगती है भूख

तब चटनी से आधा-अधूरा सना भात भी

नहीं अटकता गले में

किसान नहीं करता शिकायत

सोच भी नहीं सकता आत्महत्या के बारे में

जब तक मिलता रहे पूरे परिवार को

दो चटनियों से भात।"[9]

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' संवेगात्मक लोकोन्मुखता का कवि हैं। यह लोकोन्मुखता मूलतः ग्रामीण जनमानस और किसानी प्रतिबद्धता का परिणाम है। सुदर्शन वशिष्ठ ने 'ज़मीन का कवि : त्रिगर्ती' नामक समीक्षात्मक आलेख में कहा है कि– "ग्राम्य परिवेश की सहज अनुभूति कविता के माध्यम से इसमें देखने को मिलती है।"[10] 'मैं अराजक हूँ' संवेगात्मक लोकोन्मुखता और लोकपक्षधर संवेगात्मकता की कविता है। कवि की कविता का संवेग किसान और लोक मानस से संपृक्त है। कविता में प्रस्तुत 'मिट्टी सने लोग' अभिजात्यवादी संस्कृति या कैमराजीवी लोग नहीं है, जो फोटोग्राफी करने या फोटो खींचने भर के लिए मिट्टी को हाथ में लगाने का ढोंग करते हैं। 'मैं अराजक हूँ' कविता के संदर्भ में चंद्रकांत सिंह का कथन है– " 'मैं अराजक हूँ' कविता में भी बनारस है। यहाँ लोक को गढ़ने वाली वो छवियाँ हैं जो अपना जांगर बचाकर श्रम करती हैं, घूरे पर सोती हैं और जिन्हें देखने वाला कोई नहीं।"[11] कविता की पंक्तियाँ हैं–

"क्योंकि मैं मिट्टी की बात करता हूँ

और अनायास ही रोते-मुस्कुराते चले आते हैं

मेरी कविताओं में मिट्टी सने लोग

मिट्टी की खुशबू बिखेरने"[12]

वैश्विक ग्राम-संकल्पना, जैव-विविधता, उर्वरक एवं कार्बन खेती, जनसंख्या-वृद्धि और पारिस्थितिकीय परिवर्तनशीलता के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और रेडिओधर्मी प्रदूषण हो रहा है। 'नदी का खोना' कविता पर्यावरणीय चिंता और पारिस्थितिकी बोध के दंश एवं द्वंद्व की अभिव्यक्ति है। यह न केवल मानव-श्रृंखला के लिए अभिशाप है, बल्कि जैव-विविधता के लिए भी संकेतक है। यह जल संरक्षण की कविता ही नहीं है, बल्कि जल-क्षरण एवं प्रदूषण के अभिशप्त की भावाभिव्यक्ति भी है। चंद्रकांत सिंह ने अपने शोध आलेख में कहा भी है– "कवि का व्यक्तिगत जीवन ताउम्र राग-रंग एवं संघर्ष के बीच निर्मित हुआ, यही कारण है कि कविताओं में भी प्रकृति के उत्सव की मार्मिक कथा अभिव्यक्त हुई है।"[13] कविता की पंक्तियाँ हैं–

"बिना पानी के बादल

बादल ही रहे

बिना बर्फ़ के पहाड़

पहाड़ ही रहे

पर बिना पानी के नदी

खो बैठी अपनी संज्ञा

बन गई रेत"[14]

'स्लेट ख़ान के मजदूर' कविता के मूलतः तीन पक्ष है– श्रमिक जन-समाज का हाशियाकरण, पर्यावरणीय चिंता एवं जैव-विविधता और सत्ता की क्रूरता में श्रमिक जन-जीवन का शोषण। यह कविता श्रमिक जन-संवेदना के भाव एवं भूगोल के साथ पारिवारिक अनुभूति और आजीविका के संकट की यथार्थधर्मी अभिव्यक्ति है। यह खान मजदूर पहाड़ पर हाथ से स्लेटी पत्थर निकालने का काम करते हैं। सत्ता की निरंकुशता से पहाड़ से पत्थर निकालना अवैध घोषित होता है, जिसके माध्यम से पर्यावरणीय चेतना और पारिस्थितिकी बदलाव की अभिव्यक्ति होती है–

"देखते ही देखते कितने पहाड़

विस्फोटों के ज़ोर से मटियामेट हो गए

कितने गगनचुम्बी पहाड़ ले गए जलसमाधि

कितने ही नाले पीस दिए गए

उड़ेल दिए गए कितने ही पहाड़ सीमेंट फैक्टरियों में

कितने ही पेड़ों की धड़कनों पर पता नहीं क्यों चला कुल्हाड़ा"[15]

'हार' कविता विकृत सामाजिक सरोकार में मानवीय नियति एवं संवेगानुभूति की त्रासद अभिव्यक्ति है, जो भावबोध के आधार पर पशु और मनुष्य की सघन सांद्रता का भाव-नियोजन करती है। इस कविता में भाव का प्राथमिक संदर्भण नहीं है, बल्कि यथार्थ द्विसंवेगात्मक भाव है, जो शब्द-स्पर्श से नहीं, संवेग के अर्थ से संप्रेषित होते हैं। उद्धरण है–

"हम अब भी कुत्ते को कुत्ता कहकर दुत्कारते हैं

स्वार्थ में मारते हैं

पर कुत्ता हमें मनुष्य कहकर दुत्कारता नहीं

स्वार्थ में मारता नहीं

हमें हीनता से पुकारता नहीं

और यहीं हम कुत्ते से हारते हैं

जब-जब उसे दुत्कारते हैं।"[16]

सुशीलकुमार फुल्ल का मत है– "शैली का तारल्य एवं विषय की समसामयिक प्रासंगिकता इनकी रचनाओं की विशेषता है।"[17] वस्तुतः 'विषय की समसामयिक प्रासंगिकता' अखबार की वृत्ति होती है, कविता की प्रवृत्ति नहीं। यह गलत व्याख्या ही नहीं, बल्कि आलोचक की अवैज्ञानिक और मोटी अक्ल अथवा शोध-शून्यता का ही परिचायक है। कविता के संप्रेषण का काम अर्थ के बोध से ही नहीं, बल्कि बिंब ग्रहण से मानकीकृत होता है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता में ऐंद्रिक सूक्ष्मधर्मिता तथा अर्थ का बिंबधर्मी संक्षेपण है। 'गीत गाते बच्चे' कविता विकृत-विघटित जीवन मूल्य और सरोकार की सामाजिक पक्षधरता की अभिव्यक्ति है। विषम-मूल्य एवं

क्षरित-सरोकार में सेवा एवं सुविधा का प्रतिफलन बढ़ा है और संवेग का आयतन घटा है, इसलिए कवि इस कविता में बिंब का जिंदादिल दृश्य बच्चे के निश्छल मनोवेग से खींचता है। कविता की पंक्तियाँ हैं–

"हम बच्चों के

बुरे वक्त की तस्वीरें उतारते हैं

जब वे कराह रहे होते हैं

रो रहे होते हैं

या सूख चुके होते हैं

आँखों से ढुलक कर

गालों की गर्द पर उनके आँसू"[18]

'गालों की गर्द पर उनके आँसू' पंक्ति में अर्थ की सघनता और सूक्ष्मता है, जिसे व्यंजित करने के लिए 'आँसू' को 'गर्द' पर दृश्यांकित किया गया है।

'बिन सींगों का बैल' कविता का मूल प्रतिपाद्य है– ग्रामीण जनमानस की किसानी संवेदनशीलता और ऐंद्रिक सूक्ष्मदर्शिता। यह कविता किसान का सूक्ष्मदर्शी इतिहास है, जहाँ जीवन की मुफलिसी का वर्चस्व सामाजिक परिप्रेक्ष्य का उद्घाटन करता है। ऐंद्रिक सूक्ष्मदर्शिता और किसान का प्रतिबिंब सघन बिंब के रूप में प्रस्तुत है–

"वह खा रहा था

एक रोटी

चाव से बैठकर

एक पत्थर पर

जो बासी थी

रूखी थी

जैसे

वह खा रहा हो

कुछ भूसी"[19]

चंद्रकांत सिंह ने कहा है कि– "कवि राजीव त्रिगर्ती गहन प्रेम के कवि हैं किंतु उनके यहाँ प्रेम मात्र आकर्षण भर नहीं है और न ही प्रेम को जीवन से काटकर देखने का भाव ही है।"[20] राजीव कुमार त्रिगर्ती की प्रेमपरक कविता का न्यूनतम पक्ष आध्यात्मिक बोध का स्पर्श करता है। 'मेरे लिए' कविता में प्रेम का सर्वस्व स्व-संवेदना में नहीं, बल्कि पर-संवेग पर आधारित है, जहाँ प्रेम की प्रवणता एवं सघनानुभूति विद्यमान है। यह प्रेम का निस्वार्थ और निश्छल पक्ष है, जहाँ कवि कहता है–

"मैंने जो भी चाहा

तुम्हारे लिए चाहा

तुम्हारे होने के लिए चाहा"[21]

आलोचक सुशीलकुमार फुल्ल का मत है कि– "भावानुभूतियों की विविधता, कलात्मक शिल्प एवं रागात्मक-काव्यात्मकता इनकी रचनाओं को सम्मोहक बनाती है।"[22] इनकी प्रेमपरक कविता में मूलतः मिलन, विह्वलता, मादकता, अंतर्लाप, तन्मयता, एकात्मकता, मांसलता, साहचर्य और औत्सुक्य जैसे मनोवेग प्रबल है। 'जागृत प्रेम' कविता में प्रेमाभिव्यक्ति का स्वरूप सैद्धांतिक विनियमन से नहीं, बल्कि हृदयानुभूति और संवेगानुभुति से निर्धारित होता है। प्रेम की कोई सीम नहीं होती है। वह चित्त से चित्त का उद्वेग है। प्रेम का मूल मानदंड हृदय-हार्दिकता ही है, जो शक्ल या अक्ल से निर्धारित नहीं होता है, बल्कि मन की प्रवणता से नियंत्रित होता है। सुदर्शन वशिष्ठ ने 'जागृत प्रेम' कविता की समीक्षा में कहा है कि– "प्रेम का पैमाना कोई नहीं है। इसे मापा नहीं जा सकता। प्रेम कितना गहरा है, यह केवल महसूस ही किया जा सकता है। प्रेम का आभास अनुभूति से होता है।"[22] यह कविता हृदयानुभूति का सॉफ्ट कॉर्नर है। कविता की पंक्तियाँ हैं–

"प्रेम की गहराई को

नहीं दिखाया जा सकता है मापकर

प्रेम की ऊँचाई को

मापने के लिए

निर्धारित नहीं किया जा सकता मानदंड"[24]

'गूलर का फूल' कविता प्रेम-संवेदन की मार्मिक प्रस्तुति है, जहाँ हृदय का निवेदन तन्मयता और तल्लीनता से व्यंजित हुआ है। सांस्कृतिक-साम्राज्यवाद और पूँजीवादी-राष्ट्रवाद के दौर में लोक-जीवन का विकृतीकरण हुआ है, लेकिन 'गूलर का फूल' कविता सामाजिक सरोकार की भावाभिव्यक्ति करती है। गूलर का फूल मूलतः पित्त-विकार, पीलिया, पेचिश और मधुमेह के निराकरण के लिए सहायक होता है। गूलर का वैज्ञानिक नाम 'फिकस रेसमोस' है, जिसे क्लस्टर फ़िग भी कहा जाता है। इसके 'उमर' और 'उडुम्बर' नाम भी है। यह कविता प्रेम की तात्त्विक कहानी है, जहाँ मांसलता या बॉडी काउंट नहीं, बल्कि स्वच्छ प्रेम विह्वलता है। पंक्तियाँ उद्धृत हैं–

"मैं तुमसे कब दूर हो सकता हूँ?

और जब मैं

तुमसे दूर नहीं हो सकता

तो कैसे तुम मुझसे दूर हो सकती हो

कैसे मुझे भूल सकती हो

बताओ

मेरे लिए कैसे तुम

गूलर का फूल हो सकती हो?"[25]

निष्कर्ष

हिमाचल में अस्सी के दशक से पूर्व और तकरीबन अस्सी तक जो अंतर्मुखी अथवा वैयक्तिक काव्यधारा प्रवाहित हुई उसके प्रतिकार में कवि कुमार कृष्ण की कविता से हिमाचल की हिंदी कविता में लोकवादी कविता धारा का प्रवर्तन हुआ है। इस कविता धारा के केंद्र में लोक और ग्राम जन-संवेगाभिव्यक्ति मुख्य प्रवृत्ति रही है, जो वर्तमानकालिक हिमाचली हिंदी कविता की आधारभूमि एवं कसौटी है। इसी परंपरा में लोक-उत्पादित संवेदना के कवि राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' का नाम आता है। इक्कीसवीं सदी की हिमाचल की हिंदी कविता में ग्रामीण संवेदना और पहाड़ी तथा ठेठ परिवेश की अन्विति राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' के कविता की केंद्रीय सामाजिक कसौटी है, जो संवेग और समय की शिनाख्त के लिए यथार्थ की समीक्षा करती है और स्थानीय सरोकार से लेकर वैश्विक सत्ता की संदर्भिका प्रस्तुत करती है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की संवेदनात्मक अंतर्दृष्टि लोक से फूटती, पल्लवित, पोषित और विकसित होती है। लोक का यह परिवेश बौद्धिक या सैद्धांतिक कसौटी से नहीं बना है, बल्कि यथार्थ और जीवनानुभूति की संवेदनशीलता से बुना हुआ है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता का समाज अनुभवाश्रित है, जो मूलतः संवेग की सघनता और सामाजिकता से उपजा है, न की तात्कालिक आवेगानुभूति से जन्मा है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता की लोकोन्मुखता मूलतः संवेग-सापेक्ष और समयानुपातिक है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' हिमाचल का प्रथम बहु-बिंबधर्मी कवि है और इनकी कविता में बिंब का अर्थ-बोध मूलतः संवेग के संयोजन से संप्रेषित एवं संक्षेपित होता है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता में स्थानीय शब्द-चयन कविता के लोकपक्ष के स्वरूप का अभिव्यक्तीकरण है, इसलिए कवि का तपरु, चवर्ख, सिल, बट्टे, पातड़ी, माँड, तेंदू, पट्ठे, रेबड़, दराटू, ढाठू, नाँद और ढाँक जैसा शब्द-प्रयोग लोकबद्धता का पर्याय है। राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' की कविता का संवेग और संदर्भ लोक-सरोकार से समृद्ध है, जहाँ सामाजिक जीवन का पक्ष जनपक्षधरता के निहितार्थ का बोधक है, वहाँ सांस्कृतिक जीवन का प्रसंग परंपरा के चरितार्थ का द्योतक है।

संदर्भ सूची :

1. चंद्रकांत सिंह, समकालीन हिंदी कविता का देशांतर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 182
2. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', ज़मीन पर होने की ख़ुशी, शशि प्रकाशन, बिहार, पहला संस्करण 2020, पृष्ठ 12
3. वही, पृष्ठ 66
4. चंद्रकांत सिंह, समकालीन हिंदी कविता का देशांतर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 185
5. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', ज़मीन पर होने की ख़ुशी, शशि प्रकाशन, बिहार, पहला संस्करण 2020, पृष्ठ 13
6. वही
7. चंद्रकांत सिंह, समकालीन हिंदी कविता का देशांतर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 185
8. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', ज़मीन पर होने की ख़ुशी, शशि प्रकाशन, बिहार, पहला संस्करण 2020, पृष्ठ 13
9. वही, पृष्ठ 14
10. नर्बदा कंवर (संपादक), हिमप्रस्थ, ज़मीन का कवि : त्रिगर्ती, अंक : 10-11, सूचना एवं जन संपर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश, जनवरी-फरवरी, 2022, पृष्ठ 72

11. चंद्रकांत सिंह, समकालीन हिंदी कविता का देशांतर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 184
12. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', ज़मीन पर होने की ख़ुशी, शशि प्रकाशन, बिहार, पहला संस्करण 2020, पृष्ठ 16
13. राजेन्द्र बड़गूजर (संपादक), हिमांजलि, राजीव त्रिगर्ती : जीवट संघर्ष और प्रेम के कवि, अंक : 27, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, जनवरी-जून, 2023, पृष्ठ 23
14. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', ज़मीन पर होने की ख़ुशी, शशि प्रकाशन, बिहार, पहला संस्करण 2020, पृष्ठ 23
15. वही, पृष्ठ 47
16. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', गूलर का फूल, उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ 29
17. सुशीलकुमार फुल्ल, हिमाचल का हिंदी साहित्य का इतिहास, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 152
18. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', ज़मीन पर होने की ख़ुशी, शशि प्रकाशन, बिहार, पहला संस्करण 2020, पृष्ठ 35
19. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', गूलर का फूल, उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ 16
20. चंद्रकांत सिंह, समकालीन हिंदी कविता का देशांतर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 174
21. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', प्रेम में होना, पी. पी. पब्लिशिंग, गाजियाबाद, पहला संस्करण 2024, पृष्ठ 2
22. सुशीलकुमार फुल्ल, हिमाचल का हिंदी साहित्य का इतिहास, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 152
23. योगराज शर्मा (संपादक), हिमप्रस्थ, कविता में प्रेम, अंक : 2, सूचना एवं जन संपर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश, मई, 2025, पृष्ठ 52
24. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', प्रेम में होना, पी. पी. पब्लिशिंग, गाजियाबाद, पहला संस्करण 2024, पृष्ठ 10
25. राजीव कुमार 'त्रिगर्ती', गूलर का फूल, उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008, पृष्ठ 43-44